2

धन्य-धन्य जिनवाणी माता...

धन्य-धन्य जिनवाणी माता शरण तुम्हारी आये ।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाये ।।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है।
हमारी नैया खेता है ।। 1 ।।

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे ।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे ।।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है।
जगत का फेरा मिटता है ।।2 ।।

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्तिपथ, शुभ व्यवहार उचरती ।।
माता! तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है।
महा मिथ्यातम धुलता है ।। 3 ।।

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते ।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें ।।
माता! तेरी वर्षा में, निजानन्द झरना झरता है ।
अनुपमानन्द उछलता है ।।4।।

नवतत्त्वों में छुपी हुई जो, ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द ध्रुव ज्ञायक घन का, दर्शन सदा कराती ।।
माता! तेरे दर्शन से निजातम दर्शन होता है।
सम्यग्दर्शन होता है ।।5।।

हे जिनवाणी माता! आप धन्य हैं और हम आपकी शरण में आये हैं। परम आगम ग्रन्थों का स्वाध्याय करके मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। हे माता! आपका दर्शन अर्थात् आपके वचन सुनने से भव्य जीवों को आनंद की प्राप्ति होती है और हमें संसार सागर से पार होने का मार्ग प्राप्त होता हैं।।१।।

आत्मा नित्य–अनित्य आदि अनेक गुणों से सुशोभित अनेकांत स्वरूप है, पर द्रव्यों से सर्वथा भिन्न अपने स्व द्रव्य–क्षेत्र–काल–भाव रूपी चतुष्टय में शोभित है। इस प्रकार आत्मा का स्वरूप समझने से चतुर्गति परिभ्रमण का नाश होता है, संसार में पुन: पुन: आवागमन नष्ट हो जाता है।।२।।

हे माता! आपकी वाणी निश्चय और व्यवहार दोनों नयों के माध्यम से मोक्षमार्ग का स्वरूप समझाती है वीतरागता स्वरूप मोक्षमार्ग को बतलाती है और स्वाध्याय रूपी शुभ व्यवहार की प्रेरणा देती है। आपकी सेवा करने से अर्थात् आपका श्रवण पठन करने से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है और अनादिकाल के मिथ्यात्व का नाश होता है।।३।।

हे जिनवाणी माता! आपकी शरण में आत्मा की दिव्यता का अनुभव होता है आपकी वाणी की अमृतमयी लोरी में मानो अनुभव रस की बारिश होती है। हे माता! आपके वचन रूपी वर्षा में आत्मा के निजानंद का झरना झरता है और स्वरूप का अनुपम आनंद उछालें मारता है।।४।।

हे माता! आप नव तत्वों के मध्य छिपी हुई एक ज्ञायक ज्योति का दर्शन कराती है और आपकी वाणी चिदानंद ध्रुव ज्ञायक घन आत्मातत्त्व का दर्शन कराती है। हे माता! आपके दर्शन से अर्थात् पठन श्रवण से अपनी आत्मा का दर्शन होता है अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।।५।।